उद्देश्य तिवारी 'उदय'

सतना, मध्य प्रदेश

थकना नहीं मेरे यार

जीत की रेखा छूते–छूते,
कुछ कदमों से हार गए,
चारों ओर फैलाई नजरे,
अपने ही मन से हार गए।
एक दृश्य; विकट खड़ा सामने,
अन्तर्मन को हिलाता है,
वर्षों की कड़ी मेहनत को,
एक पल में धूल चटाता है।
एक कहता; तू हार गया,
जीवन को लड़ते–लड़ते,
सपनों में तेरे जान नहीं,
जीता क्यों? मरते–मरते।
क्या केवल जीना; जीना है,
या इसमें फँसकर रहना है,
कुछ है आगे करने की सोच,
या व्यर्थ पड़े ही रहना है।
ऐसे ही कुछ क्षण बैठे–बैठे,
जीवन के धीरे से बीत गए,
नहीं पता चला कुछ भी,
तुम कितने पीछे छूट गए।
दूजी ध्वनि, कर्णों में आकर,
गम्भीर–सा शोर मचाती है,
कुछ कर जाने की सीख,
चुपके से आवाज लगती है।

सुन रे! मानव बात मेरी,
क्या जीत सर्वदा हो तेरी?
ऐसा तो कहीं लिखा नहीं,
फिर विचलित तू क्यों है सही।
मन के उलझे विचारों से,
अपनी नौका को बाहर कर;
न जाने कैसी समस्या आए,
गति जीवन की उस पार कर।
अंधियारे के छा जाने पर,
तू जुगनू बन चमकता जाए,
प्रातः बेला के स्वागत में,
तू हँसी–खुशी से भर जाए।
हर पथ में पीड़ा आती है,
कोई नई सीख दे जाती है,
पुष्प की इच्छा रखनेवाले,
काँटों से होकर जाती है।
गूँज सुनो; अपने भीतर की,
पूछो आगे क्या करना है?
पीछे जैसे रोकर के ही,
क्या आगे भविष्य को गढ़ना है।
अब दृढ़–प्रतिज्ञ होकर के तुम;
समर भूमि में कूच करो,
नहीं इधर–उधर, दृष्टि सीधे
कर–पग की गति को तीव्र करो।

हाँ, पहुँच गए; तुम समीप,
द्वार जल गए हैं दीप,
अब नहीं है देर ज्यादा,
निश्चित है बनना, तेरा महीप।
प्रकाश हुआ; आलोकित तुझमें,
धीरज को शक्ति बनाया है,
कदम–कदम बढाकरके ही,
जीत का सुख पाया है।
क्या कहा था कि मैंने
हार ही कड़ी है जीत की,
जीतकर हार से सीख लेना,
जिंदगी ही घड़ी है उम्मीद की।
सच है, मन के जीते जीत;
औ' मन के हारे हार,
'उदय' करे विनती सभी से,
कभी थकना नहीं मेरे यार।